ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा

पी-एच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रारूप

विश्वविद्यालय मैथिली विभाग

संकाय – मानविकी

विषय : आधुनिक मैथिली साहित्यमे पद्मश्री डॉ. उषाकिरण खानक योगदान

शोध निर्देशक

डॉ. अरविन्द झा

सहायक प्राचार्य, मैथिली विभाग

मारवाड़ी महाविद्यालय, दरभंगा

सम्पर्क : 09040201409

ईमेल : arvindjhaalik@gmail.com

गवेषक

प्रियंका कुमारी

PAT-22110063

NET-BR07100113

ग्रा०+पो०+थाना – रुद्रपुर

जिला – मधुबनी (बिहार)

पिन - 847411

शोध-प्रारूप

आधुनिक मैथिली साहित्यमे पद्मश्री डॉ. उषाकिरण खानक योगदान

प्रस्तावना –

पद्मश्री डॉ. उषाकिरण खान हिन्दी आ मैथिली साहित्यक एकटा चर्चित हस्ताक्षर छथि। हिनक सक्रियताक चर्चा मैथिली आ हिन्दी साहित्यमे समानरूपसँ रहलन्हि अछि । हिनक जन्म 24 अक्टूबर सन् 1945 ई. मे दरभंगा जिलाक मझौलिया गाममे भेल छलन्हि । डॉ. खान पटना विश्वविद्यालय अन्तर्गत पटना कॉलेजमे इतिहास ओ पुरातत्व विज्ञानक विभागाध्यक्षक पदकँ सुशोभित करैत निरन्तर साहित्य सेवामे लागल रहलीह । साहित्यमे अविस्मरणीय योगदानक हेतु भारत सरकार द्वारा हिनका सन् 2015 मे पद्मश्रीसँ सम्मानित कएल गेलन्हि । एकर अतिरिक्त हिन्दी ओ मैथिलीक कतिपय राष्ट्रीय एवं राजकीय प्रतिष्ठित संस्थाक द्वारा हिनका अनेक पुरस्कार यथा: हिंदी सेवी सम्मान (राजभाषा विभाग, बिहार सरकार), महादेवी वर्मा सम्मान (बिहार राजभाषा विभाग), दिनकर राष्ट्रीय पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, कुसुमांजलि पुरस्कार, विद्या निवास मिश्र पुरस्कार आदिसँ सम्मानित कएल गेलन्हि । सन् 2011 मे मैथिली उपन्यास 'भामती 'क लेल हिनका साहित्य अकादमी मूल पुरस्कार सँ सेहो सम्मानित कएल गेलन्हि । बहुभाषाविद् आ बहुभाषाप्रवीण डॉ. खानक मैथिली साहित्यमे अमूल्य योगदान छन्हि । पाँच दशकक अपन साहित्य यात्रामे डॉ. खान मैथिली साहित्यक कोशकँ अपन अजस्र साहित्यिक मेधा ओ प्रतिभासँ निरन्तर पुष्ट करैत रहलीह । उपन्यास, कथा-साहित्य, बाल-साहित्य, कविता आदि प्राय: साहित्यिक सभ विधामे मे अपन देश-काल ओ इतिहास-बोधकँ रचैत डॉ. खान अमर भ' चुकलीह अछि । मात्राक दृष्टिएँ देखल जाए त' डॉ. खानक सक्रियता मैथिली साहित्यक अपेक्षा हिन्दी साहित्यमे बेसी रहलन्हि अछि, मुदा, जेना सामान्यरूपसँ होइत छैक जे आन भाषामे नाम-यश प्राप्त करितहि साहित्यकार अपन मातृभाषासँ कन्नी काटय लगैत अछि, ताहि दुर्गुणसँ स्वयंकँ दूर रखैत डॉ. खान मैथिली साहित्यिमे बरोबरि उपस्थिति बनौने

रहलीह । मैथिली साहित्यक प्रसिद्ध आलोचक ओ साहित्यकार तारानन्द वियोगी हुनक सन्दर्भमे सत्यहि कहैत छथि जे ओ हिन्दीमे लिखितहु रेणु आ यात्री जकाँ मैथिलिए जन-जीवनकँ रचैत रहलीह । डॉ. खान मैथिली साहित्यमे अपन पहिल डेग सन् 1980 मे अपन प्रसिद्ध उपन्यास अनुत्तरित प्रश्नक संग रखलीह । तत्पश्चात् लगभग आधा दर्जन उपन्यास यथा: हसीना मंजिल (1987) दूर्वाक्षत, भामती (2008), पोखरि-रजोखरि (2016), मनमोहना रे (2020) सहित दू गोट कथा संग्रह काँचहि बाँस(2003) आ गोनू झा क्लब (2016) सँ बेस प्रसिद्धि प्राप्त कयलीह । एकर अतिरिक्त बाल साहित्य ओ कवितामे सेहो हाथ अजमओलीह आ ओत्तहु सफल रहलीह ।

पद्मश्री डॉ. उषाकिरण खान इतिहासक अध्येता छलीह आ कोशिकन्हाक विडम्बनापूर्ण जीवनकँ लगीचसँ अनुभव कएने छलीह जे हिनक साहित्यिक दृष्टिकँ फरीच्छ करबामे बेस सहायक प्रतीत होइत अछि । ग्रामीण जीवनक संत्रास, नगरीय जीवनसँ निस्तेज होइत प्रेम, स्त्री-जीवनक विपर्यय, युगीन चेतना हिनक साहित्यक पृष्ठभूमिकँ बेस मजगूती प्रदान करैत भेटैत अछि । खासक' स्त्री-विमर्शकँ ओ एकटा नव आयाम दैत प्रतीत होइत छथि ।

क्षीणप्राय मानवीय संवेदनाक एहि बाजारवादी व्यवस्थामे, प्रखर होइत स्त्री गौरवकँ रचैत ओ उग्र नहि बुझाइत छथि । नारी-सुलभ सहजता ओ गम्भीरताक संग अपन कर्तव्य-पथपर अडिग रहैत ओ निरन्तर बाट अपनहि बनयबाक लेल कृतसंकल्पित बुझाइत छथि। हुनक स्वभावमे विद्रोह नहि, विवेक नजरि अबैत अछि । अनेरो हो-हल्ला मचा समाचारमे बनल रहब हुनका स्वीकार्य नहि छन्हि । जीवनक प्रति हिनक अपन फराक 'दृष्टि' छन्हि आ जकरा अंगेजने ओ नित नव-नव डारि पाड़बामे मस्त-व्यस्त नजरि अबैत छथि ।

कथा शिल्प आ भाषा शैलीक चयनमे डॉ. खान कोनो पाण्डित्य प्रदर्शनमे विश्वास नहि रखैत छथि । ओ स्वयं जहिना बजैत छथि तहिना अपन बात सोझ-सोझ कहि जाइत छथि । जे जेना देखैत छथि, तकर बिम्ब अथवा चित्र बना साहित्यक माध्यमे समाज लग राखि दैत छथि ।

प्रस्तुत शोधक अन्तर्गत डॉ. खानक उपरोक्त कृति सभक वैशिष्ट्यकेँ रेखांकित करैत मैथिली साहित्यमे ओकर उपादेयताक मूल्यांकन करबाक योजना अछि। शोध-वृतिकेँ सम्प्रति सात अध्यायमे बाँटल गेल अछि। लेखिकाक साहित्यिक कृति सभक भाषा-शास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करैत देश-कालसँ ओकर अन्तर्सम्बन्ध ओ विषय-वस्तुक प्रासांगिकताक अवलोकन कएल जाएत।

एवम् प्रकारेँ उक्त शोधवृत्ति मैथिली साहित्यमे पद्मश्री उषा किरण खानक अमूल्य योगदानकेँ रेखांकित करैत भूत, वर्तमान ओ भविष्यमे ओकर प्रासांगिकताकेँ प्रमाणित करबाक प्रयास करब।

शोधक आवश्यकता :

प्रत्येक काल - खण्डक अपन विशेषता आ उपादेयता होएत छैक कारण मानव जीवनक कतिपय महत्वपूर्ण सन्दर्भ ओहिसँ संपृक्त होएत छैक जकर आलोकमे साहित्यक इतिहास बोध पुष्ट आ प्रबल भ' समाजकेँ बुझबामे सहयोग करैत अछि । पद्मश्री डॉ. उषाकिरण खानक मैथिलीक सम्पूर्ण साहित्य पर समेकित रूपसँ एखन धरि शोधपरक कार्य नहि भेल। जाहि हेतु हमरा मोनमे एहि सन्दर्भमे शोधक विचार उद्भूत भेल। हिनक सभ मैथिलीमे लिखल गेल साहित्यकेँ एकत्रित क' ओहि तत्वक परीक्षण आ विश्लेषण करब जाहिमे समय - कालक प्रभावसँ समाजमे आएल नवपरिवर्तनक परिणामस्वरूप भखरार होएत नवल द्रष्टिकोणकेँ उध्दरणक संग तार्किकतासँ प्रस्तुत करब। एहि शोध कार्यकेँ पुरा भेलाक बाद मैथिली साहित्यमे एतद् विषयक कमीक पूर्ती बहुत दूर धरि होयत से आशा करैत छी।

शोधक महत्व :

साहित्यकार कोनो निर्दिष्ट देश-कालक प्रवक्ता, समकालीन युग-चेतनाक संवाहक ओ मार्गदर्शक होइत छनि। साहित्य जँ समाजक अयना थिक त' साहित्यकार ओहि अयनाक परावर्तक सतह जे युगीन यथार्थक चित्रकेँ अपन रचनाक माध्यमेँ पाठकक अन्तर्दृष्टिमे उतारि दैत अछि। साहित्यकार केवल साहित्येकेँ समृद्ध नहि करैत अछि अपितु ओ सामाजिक चेतनाकेँ सेहो धार दैत अछि। अस्तु, कोनो साहित्यकारक योगदानक मूल्यांकन केवल ओहि

साहित्यकारक व्यक्तिगत साहित्यिक उपलब्धिक मूल्यांकन नहि होइत अछि अपितु ओ ओहि समस्त काल-खण्डक विभिन्न आयामक सम्यक् मूल्यांकन होइत अछि जे वर्तमान ओ भावी साहित्यिक अध्येता सहित नवोदित साहित्यकार लेल एकटा दिशा-निर्देशिकाक काज करैत अछि। प्रस्तुत विषयक शोध-वृत्ति साहित्यिक अध्येताकँ पद्मश्री उषा किरण खानक समग्र साहित्यकँ बुझबा-गुनबा हेतु एकटा फरीच्छ दृष्टि प्रदान क' सकैत अछि, इएह एकर महत्व आ उपादेयता थिक।

शोधक उद्देश्य :

प्राचीन कालमे साहित्य उपदेश ओ मनोरंजन लेल लिखल जाएत छल। मुदा, बदलैत सामाजिक - सांस्कृतिक परिवेशमे साहित्यक विषय - वस्तु, शैली, शिल्प, कथ्य आओर उद्देश्य सेहो बदलैत रहल अछि। आजुक साहित्य मानव जीवनक अनेक समस्या दिस ध्यान आकृष्ट करैत सत्ता आ व्यवस्था लग विविध प्रासंगिक सवालक संग उपस्थित भ' मानवीय संवेदनाकँ झकझोरैत अछि। प्रतिपक्षक रूपमे ठाढ़ भ' दीन - हीन, शोषित - पीड़ित, वंचित समाजक समानताक अधिकारक हेतु सत्ता आ व्यवस्थासँ प्रतिवाद करैत अछि।लैंगिक, आर्थिक आ जातिगत असमानताक विरुद्ध पीड़ित समाजक चेतनाकँ जागृत करबाक प्रयास करैत अछि। तँ, साहित्यमे किछु नीक तँ किछु अधलाह तत्वक समावेश सेहो होएत छैक जकरा स्वीकार अथवा प्रतिकार करब सहज नहि होएत छैक जे ओहि कालक साहित्यमे दृष्टिगोचर होएत छैक। हमर एहि शोधक उद्देश्य आधुनिक कालमे लिखल पद्मश्री उषाकिरण खानक साहित्यमे उपरोक्त संघर्षकँ रेखांकित करैत ओहि निष्कर्ष बिन्दू तक पहुँचबाक अछि जतए एहि संघर्षकँ विराम भेटैत होएक।

पूर्वमे कएल गेल शोध - विषयक कार्य :

विश्वविद्यालय शोध सारणीक अवलोकनोपरांत पाओल जे अद्यपर्यंत एहि विषय पर शोध कार्य नहि भेल अछि हेतु जे 'आधुनिक मैथिली साहित्यमे पद्मश्री डॉ. उषाकिरण खानक योगदान' पर व्यापक विमर्श करए जा रहलहुँ अछि।

शोध स्रोत आ प्रविधि :

प्रस्तुत शोधक क्रममे हिनक विभिन्न पोथी ओ पत्र -पत्रिकामे प्रकाशित रचना सभक अन्वेषण/अध्ययन करब । एहि सुक्ष्म अध्ययनक माध्यमे हुनक साहित्य/व्यक्तितित्व आओर कएक गोट आयाम सहित लेखन - प्रवृत्तिकेँ विश्लेषित करब। एहिसँ संदर्भित समीक्षात्मक/आलोचनात्मक, आलेख/पोथीक अध्ययन सहित अन्यान्य भाषाक पोथी ओ पत्र - पत्रिकाक संधान करब । एहि मादे विभिन्न सम्मानित साहित्यकार लोकनिसँ संपर्क स्थापित करबाक अतिरिक्त विभिन्न सरकारी - गैरसरकारी अभिलेखागार, पुस्तकालय प्रकाशन आदिक सहायता लेब ।

ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, मैथिली विभागक पुस्तकालय, केन्द्रीय पुस्तकालय, कामेश्वर सिंह दरभंगा, संस्कृत विश्वविद्यालय केन्द्रीय पुस्तकालय, साहित्य अकादेमी, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, हिन्दी - मैथिली अकादमी लेखागार, पटना, पटना कॉलेज, ज्ञान मन्दिर पुस्तकालय, सेंट्रल लायब्रेरी, पटना, चेतना समिति, पटना, साहित्यिकी सरिसव पाही, मधुबनी, किसुन संकल्प लोक, सुपौल, शेखर प्रकाशन, मैथिली अकादमी, पटना आदिक अध्ययन करब। स्वयं पद्मश्री उषाकिरण खान संग पूर्वमे कएल गेल वार्ता प्रविधि रहत ।

प्रस्तावित शोध प्रबन्धक संभावित रूपरेखा -

तत्काल एहि 'शोध-प्रबंध' केँ निम्न अध्यायमे विभक्त करबाक योजना बनाओल अछि। मुदा, अनुसंधान कार्य सम्पादनक क्रममे एहिमे परिवर्तन - परिवर्धनक संभावना भ' सकैत अछि। सम्प्रति संभावित अध्यायक विभाजन एहि प्रकारेँ अछि -

प्रथम अध्याय - पद्मश्री डॉ. उषाकिरण खान : जीवन ओ साहित्य ।

दोसर अध्याय - पद्मश्री डॉ. उषाकिरण खानक मैथिली उपन्यास ।

तेसर अध्याय - पद्मश्री डॉ. उषाकिरण खानक मैथिली कथा।

चारिम अध्याय - पद्मश्री डॉ. उषाकिरण खानक मैथिलीक अन्य रचना।

पाँचम अध्याय - पद्मश्री डॉ. उषाकिरण खानक साहित्यमे स्त्री – चेतना।

छठम अध्याय - पद्मश्री डॉ. उषाकिरण खानक साहित्यमे सामाजिक - सांस्कृतिक सरोकार आ यथार्थबोध।

सातम अध्याय - पद्मश्री डॉ. उषाकिरण खानक साहित्यमे भाषा शिल्प एवं विषय - वस्तु।

उपसंहार

परिशिष्ट :

'शोध-प्रबंध'क अध्यायक संक्षिप्त स्वरूप –

प्रथम अध्याय - पद्मश्री डॉ. उषाकिरण खान : जीवन ओ साहित्य।

पद्मश्री उषा किरण खानक जीवन ओ साहित्य विषयक अन्तर्गत लेखिकाक व्यक्तिगत जीवन ओ साहित्यिक विशद् वर्णन प्रस्तुत करबाक योजना अछि।

दोसर अध्याय - पद्मश्री डॉ. उषाकिरण खानक मैथिली उपन्यास।

पद्मश्री उषाकिरण खानक मैथिली उपन्यास। एहि अध्यायक अन्तर्गत हुनक उपन्यास विधाक विवेचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करैत ओकर उपादेयताकेँ रेखांकित कएल जाएत।

तेसर अध्याय - पद्मश्री डॉ. उषाकिरण खानक मैथिली कथा।

पद्मश्री डॉ. उषा किरण खानक मैथिली कथाक अंतर्गत हुनक समस्त प्रकाशित कथा संग्रहक विवेचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करैत मैथिली साहित्यमे ओकर स्थान ओ उपादेयता सुनिश्चित कएल जाएत।

चारिम अध्याय - पद्मश्री डॉ. उषाकिरण खानक मैथिलीक अन्य रचना।

डॉ. उषाकिरण खानक मैथिलीक अन्य रचनामे हिनका द्वारा विभिन्न क्षेत्रमे कएल गेल काज यथा – आलेख, प्रिंट मिडिया, भाषण, साक्षात्कार आदि सभकें समेटबाक प्रयास करब।

पाँचम अध्याय - पद्मश्री डॉ. उषाकिरण खानक साहित्यमे स्त्री – चेतना।

पद्मश्री उषा किरण खानक मैथिली साहित्यमे स्त्री चेतनाक अन्तर्गत आधुनिक स्त्री-विमर्शक सन्दर्भमे पद्मश्री खानक साहित्यिक दृष्टिकेँ अकानबाक नियार अछि।

छठम अध्याय - पद्मश्री डॉ. उषाकिरण खानक साहित्यमे सामाजिक - सांस्कृतिक सरोकार आ यथार्थबोध

पद्मश्री उषाकिरण खानक मैथिली साहित्यक सामाजिक, सांस्कृतिक सरोकार आ यथार्थबोधक अन्तर्गत लेखिका साहित्यमे समकालीन समाजक यथार्थ ओ जीवन पद्धतिक सन्दर्भमे हुनक दृष्टिकोणक अवगाहन करबाक योजना अछि।

सातम अध्याय - पद्मश्री डॉ. उषाकिरण खानक साहित्यमे भाषा शिल्प एवं विषय - वस्तु।

सातम अध्याय, डॉ. पद्मश्री उषा किरण खानक मैथिली साहित्य: भाषा, शिल्प एवं विषय-वस्तुक अन्तर्गत लेखिकाक साहित्यिक कृति सभक भाषा-शास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करैत देश-कालसँ ओकर अन्तर्सम्बन्ध ओ विषय-वस्तुक प्रासांगिकताक अवलोकन करब।

उपसंहार :

एहि सात अध्यायमे कयल गेल विवेचन, विश्लेषणक समाहार प्रस्तुत करबाक प्रयास करब। एहिसँ ‘शोध-प्रबन्ध’क महत्व, वैशिष्टय, प्रयोजन एवं उपादेयता सिद्ध होयत।

परिशिष्ट :

अधीत ग्रंथक सूची –

1. मिश्र, जयकांत, मैथिली सहित्यक इतिहास, साहित्य अकादेमी नई दिल्ली।
2. झा, "श्रीश", डॉ० दुर्गानाथ झा, मैथिली साहित्यक इतिहास, भारतीय पुस्तक केंद्र, दरभंगा, प्रथम संस्करण : 1992
3. झा, डॉ० श्री अमरनाथ झा, आधुनिक मैथिली साहित्यक पृष्ठभूमि, अमृत प्रकाशन, दरभंगा : 1994
4. झा, डॉ० भीमनाथ, परिचायिका, भवानी प्रकाशन, पटना, द्वितीय संस्करण : 1985
5. झा, डॉ० देवकांत, Modern Maithili Literature, साहित्य अकादेमी दिल्ली।
6. झा, डॉ० वासुकिनाथ, मैथिली साहित्यक रुपरेखा, चेतना समिति पटना : 2015.
7. ठाकुर, विणा, इतिहास दर्पण, प्रकाशक – श्री राम रतन झा, दरभंगा : 2008.
8. झा, दिनेश कुमार, मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास, मैथिली अकादेमी पटना।
9. भारतद्वाज, मोहन, कथा गोष्ठी, मैथिली अकादमी, पटना : 2008

10. मिश्र, मायानंद, मैथिली साहित्यक इतिहास,

किसुन संकल्प लोक, सुपौल : 2014

11. ठाकुर, डॉ० उपेन्द्र, मिथिलाक इतिहास, मैथिली अकादेमी पटना : 2011

12. पूर्वमे कएल गेल मौखिक साक्षात्कारसँ .

13. खान, डॉ. उषाकिरण, अनुत्तरित प्रश्न

14. खान, डॉ. उषाकिरण, दुर्वाक्षत, प्रकाश मंच , आदर्श कालोनी, कृष्णानगर, पटना प्र. वर्ष- 1976

15. खान, डॉ. उषाकिरण, हसीना मंजिल, प्रकाशन वर्ष- 1995

16. खान, डॉ. उषाकिरण, भामती, प्रकाशन वर्ष - 2007

17. खान, डॉ. उषाकिरण, पोखरि रजोखरि, प्रकाशन वर्ष - 2017

18. खान, डॉ. उषाकिरण, मनमोहना रे, प्रकाशन वर्ष- 2020

19. खान, डॉ. उषाकिरण, काँचहि बाँस, प्रकाश वर्ष- 2016

20. खान, डॉ. उषाकिरण, गोनू झा क्लब, प्रकाशन वर्ष - 2017

21. खान, डॉ. उषाकिरण, जाइसँ पहिने, प्रकाश वर्ष - 2008,

22. आप्टे, वी. एस. , संस्कृत – हिंदी कोष, मोतीलाल-बनारसी दास पब्लिकेशन : 2009

23. शर्मा, रामविलास, भाषा और समाज, राजकमल प्रकाशन : 2014

24. रमण, रामानन्द झा, मैथिली कथाक समाज : भाषा एवं शिल्प, चेतना समिति पटना : 2016

25. वियोगी, तारानन्द, कर्मधारय, किशुन संकल्प लोक, सुपौल : 2005

26. झा, बासुकीनाथ, मैथिली कथाक विकास, साहित्य अकादेमी, 2011

27. डॉ. सियाराम, साहित्य के दर्पण में स्त्री, पैरागोंन पब्लिकेशन : 2012

शोध निर्देशक

डॉ. अरविन्द झा

सहायक प्राचार्य, मैथिली विभाग

मारवाड़ी महाविद्यालय, दरभंगा

सम्पर्क : 09040201409

ईमेल : arvindjhaalik@gmail.com

गवेषक

प्रियंका कुमारी

PAT-22110063

NET-BR07100113

ग्रा०+पो०+थाना – रुद्रपुर

जिला – मधुबनी (बिहार)

पिन - 847411